Living the Lotus

Buddhism in Everyday Life

9
2025
VOL. 240

Rissho Kosei-kai of Sri Lanka

Living the Lotus
Vol. 240 (September 2025)

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Sachi Mikawa
Copy Editor: Parmita Shekhar, Prakash Kumar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124 FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international
@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

जीवन की शरद ऋतु की तैयारी

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

जो चीजें चली जाती हैं, वे जा रही हैं और फिर से मेरे मन को भर रही हैं

हमारे जीवनकाल की तुलना अक्सर चार ऋतुओं से की जाती है। वसंत ऋतु विकास का काल है, जब नया जीवन अंकुरों को तेज़ी से विकसित करता है; ग्रीष्म ऋतु सक्रियता का काल है, जब हम ऊर्जा से भरपूर होते हैं और सामाजिक रूप से बहुत सक्रिय होते हैं; पतझड़ कटाई का काल है, जब हम मनुष्य के रूप में परिपक्व होते हैं, अपने परिश्रम के शरद ऋतु के फलों का स्वागत करते हैं, और शीत ऋतु की तैयारी करते हैं; और शीत ऋतु शांति से जीवन जीने का काल है, जीवन के फल प्राप्त करने के बाद, जब हम उन बीजों से वसंत की नई कलियों के फूटने का इंतज़ार करते हैं जो हमसे भरकर गिर गए हैं।

इस बारे में लोगों के अलग-अलग विचार हो सकते हैं, लेकिन वर्तमान सोच के आधार पर कि हमारा समय सौ साल के जीवन का युग है, मुझे लगता है कि हम यह मान सकते हैं कि वसंत ऋतु का तात्पर्य पच्चीस वर्ष की आयु तक की अवधि से है, ग्रीष्म ऋतु का तात्पर्य पच्चीस वर्ष की आयु से पचास वर्ष की आयु तक, शरद ऋतु का तात्पर्य पचास वर्ष की आयु से पचहत्तर वर्ष की आयु तक, और उसके बाद शीत ऋतु से है।

हालांकि, इन चार ऋतुओं में से शरद ऋतु और शीत ऋतु की छवियाँ शायद ही ऊर्जावान और जीवन शक्ति से भरी हों, और मुझे लगता है कि बहुत से लोग इन ऋतुओं को ठंडे, एकाकी प्रभावों से जोड़ते हैं, जैसे पेड़ों से गिरते हुए सूखे पत्ते और हवा और बर्फ से कांपना।

दूसरी ओर, अस्तित्व की चार अवधियों की प्राचीन भारतीय अवधारणा में, जो हमारे जीवनकाल को चार ऋतुओं के अनुरूप चार भागों में विभाजित करती है, शरद ऋतु के अनुरूप वन में जाने की अवस्था को वास्तव में जीवन का स्वर्णिम काल माना जाता है - एक ऐसा समय जब विभिन्न उलझनों और दायित्वों से परेशान नहीं हुआ जाता, जब व्यक्ति जीवन की एक संतुष्टिदायक और आनंददायक अंतिम अवस्था (स्वतंत्र रूप से विचरण करने की अवस्था) के लिए तैयारी कर सकता है।

रियुता इदा के एक हाइकु को उद्धृत करते हुए, "जो चीजें जा रही हैं वे जा रही हैं, / और फिर से [मेरे मन] को भर रही हैं - / शरद ऋतु का आकाश," वास्तव में, शरद ऋतु जीवन का एक ऐसा समय है जब हम धीरे-धीरे उन चीजों से मुक्त हो जाते हैं, जो उस बिंदु तक हमें परेशान करती थीं, और हम एक स्पष्ट दिमाग और संतोषजनक और आशावान चीजों से भरे दिल के साथ सर्दियों की ओर मुड़ते हैं (हाइकु कोन्जाकु [हाइकु वर्तमान और अतीत], फुजीमी शोबो, 1988)।

हालाँकि, जिंदगी जीते हुए, हमें कभी-कभी इस बात का अफसोस होता है कि हमने कुछ अलग नहीं किया, और खासकर जिंदगी के आख़िरी पड़ाव में, ऐसे विचार हमारे मन में उमड़ पड़ते हैं। लेकिन, मुझे लगता है कि ये पछतावे और चिंतन निश्चित रूप से ऐसे "फल" बन सकते हैं जो हमें सर्दियों का सामना करने में मदद करते हैं।

पतझड़ में काटे जाने वाले ख़ुरमा और शाहबलूत, अगर हमें उनके कसैलेपन या काँटों से नफ़रत है, तो पोषण नहीं बन जाते, लेकिन अगर हम उन्हें भरपूर आशीर्वाद के रूप में स्वीकार करें और उन्हें सावधानीपूर्वक तैयार करने

में समय लगाएँ, तो हम उनके स्वादिष्ट स्वाद का आनंद ले सकते हैं। इसी तरह, हम कह सकते हैं कि कड़वी भावनाओं को "काटना" और उन्हें सर्दियों के लिए आध्यात्मिक पोषण और ऊर्जा में बदलना एक महान "फल" है जो केवल उसी मौसम में ही प्राप्त किया जा सकता है।

सर्दी सीखने का समय है

लगभग 2,600 वर्ष पूर्व, कन्फ्यूशियस, जिनका निधन चौहत्तर वर्ष की आयु में हुआ, ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के बारे में अपनी पुस्तक “द एनालेक्ट्स” में लिखा था: “पचास वर्ष की आयु में, मुझे पता था कि स्वर्ग मुझसे क्या कहता है; साठ वर्ष की आयु में, मेरे कान आज्ञाकारी होकर सुन सकते थे; और सत्तर वर्ष की आयु में, मैं मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन किए बिना अपने हृदय की इच्छा का पालन कर सकता था।” दूसरे शब्दों में, जीवन के पतझड़ में, आप ब्रह्मांड के सिद्धांतों को समझना शुरू करते हैं, और जब आप दूसरों की बातें सुनते हैं, तो उनके तर्क आपको समझ में आते हैं; और जैसे ही आप शरद ऋतु में प्रवेश करते हैं, आप शिष्टाचार और सामाजिक मानदंडों से विचलित हुए बिना, स्वाभाविक रूप से, अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकते हैं।

मैं पहले ही अपने जीवन के अंतिम वर्षों में पहुँच चुका हूँ, लेकिन एक इंसान के तौर पर, मैं अभी तक इतनी परिपक्व मानसिक स्थिति तक पहुँचने के करीब भी नहीं पहुँचा हूँ। हालाँकि, उस समय की औसत जीवन प्रत्याशा और आज की तुलना में, कन्फ्यूशियस की सत्तर वर्ष की आयु आज लगभग एक सौ दस वर्ष होगी। मैं अस्सी वर्ष का हो गया हूँ, लेकिन मेरा अभ्यास और सीखना अभी भी पूरा नहीं हुआ है, और ऐसी कई चीजें हैं जो मैं नहीं जानता या समझता, इसलिए, मैं ईमानदारी से सोचता हूँ कि मुझे जितना हो सके सीखना जारी रखना चाहिए।

ये आकांक्षाएँ उन सहज प्रवृत्तियों के समान हैं जो सभी मनुष्यों में पाई जाती हैं। इसके अलावा, अगर आपमें सीखने की ललक है, तो आप चाहे कितने भी बूढ़े क्यों न हों, कई नई चीजों से रूबरू हो सकते हैं, और वह आनंद और प्रेरणा आपको जीने की ऊर्जा के साथ-साथ जीवन की सर्दियों में आनंद लेने का भी मौका देगी।

ऐसा करने के लिए, स्वास्थ्य भी जरूरी है, लेकिन जैसा कि नागासाकी शांति प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध मूर्तिकार सेइबो कितामुरा (1884-1987) ने, जब वे सौ वर्ष के थे (जापानी आयु-गणना पद्धति के अनुसार), संस्थापक निवानो, जो उस समय सतहत्तर वर्ष के थे, के साथ बातचीत में कहा था, लंबे और स्वस्थ जीवन का रहस्य है, “क्रोधित मत होइए। चीज़ों को अपने ऊपर हावी मत होने दीजिए या परेशान मत होने दीजिए।” इस पर, संस्थापक निवानो ने कहा, “और झूठ मत बोलिए,” जिस पर कितामुरा ने उत्तर दिया, “यदि आप झूठ नहीं बोलते हैं, तो आपका मन शुद्ध है और आपका स्वास्थ्य अच्छा है,” और लोगों के अनुरोध पर, सुलेख में लिखने की अपनी दैनिक आदत का वर्णन करते हुए कहा, “शुद्ध मन, लंबी आयु।”

अपनी शिक्षा को गहरा करने का प्रयास करना, और सरल व ईमानदार होना—यह रवैया निश्चित रूप से युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श बनेगा। लेकिन मैं इस पत्रिका के किसी अन्य अंक में अपनी शिक्षा को गहरा करने के विषय पर फिर से चर्चा करना चाहूँगा।

कोसेइ, सितंबर 2025

दक्षिण अफ्रीका के लोगों के लिए खुशी लाने हेतु बुद्ध की शिक्षाओं को साझा करना

एंड्र्यू क्रिस्टी, रिश्शो कोसेई-काई, रोम, इटली (दक्षिण अफ्रीका में रहते हैं)

आप रिश्शो कोसेई-काई में कब और कैसे शामिल हुए?

मैं मई 2013 में रिश्शो कोसेई-काई में शामिल हुआ। वर्तमान में, मैं अफ्रीकी महाद्वीप के दक्षिणी छोर पर, दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में रहता हूँ। लगभग बीस वर्षों तक मैं एक अन्य जापानी बौद्ध संगठन से जुड़ा रहा। हालाँकि, समय के साथ, मैंने उस समूह के विशिष्ट और असहिष्णु विचारों पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, और धीरे-धीरे मैंने खुद को उससे दूर कर लिया। फिर भी, बौद्ध धर्म में मेरी रुचि बनी रही। एक दिन, मेरी नजर रिश्शो कोसेई-काई की वेबसाइट पर पड़ी और वहाँ एक लेख ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह मनोनीत राष्ट्रपति कोशो निवानो के बारे में एक रिपोर्ट थी, जो पूर्वी जापान में आए भीषण भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर रही थी और वहाँ के लोगों के पुनर्वास के लिए प्रार्थना कर रही थी, और पीड़ितों को हार्दिक प्रोत्साहन दे रहे थे। उस लेख को पढ़ने के बाद, मैंने तुरंत जापान में रिश्शो कोसेई-काई के हेडक्वाटर में फोन किया। दुर्भाग्यवश, उन्होंने मुझे बताया कि दक्षिण अफ्रीका में कोई धर्म सेंटर नहीं है, लेकिन उन्होंने मुझे रोम सेंटर से परिचित कराया, जिसे अब रिश्शो कोसेई-काई, रोम कहा जाता है। इस तरह मेरा संपर्क सेंटर के निर्देशक रेव. कात्सुतोशी मिजुमो से हुआ, जो वर्तमान में हमाकिता धर्म सेंटर के मिनिस्टर हैं।

इसके बाद, मैंने वेबसाइट से अंग्रेजी में क्योतेन या “सूत्र पाठ” की पीडीएफ डाउनलोड की फिर सुबह और शाम सूत्र पाठ करना शुरू कर दिया। मैंने फाउंडर निक्क्यो निवानो की पुस्तकें भी डाउनलोड कीं, जिनमें “बुद्धिज़्म फॉर टुडे” और “इनविजिबल आईलैशेज” शामिल थीं, और उन्हें पढ़ना शुरू किया। बाद में, मैंने प्रेसिडेंट निचिको निवानो द्वारा लिखित “कल्टीवेटिंग द बुद्धिस्ट हार्ट” और रेव. कोशो निवानो द्वारा लिखित “द बुद्धा इन एवरीवन्स हार्ट” नामक ई-पुस्तकें खरीदीं, जिससे धीरे-धीरे रिश्शो कोसेई-काई के बारे में मेरी समझ गहरी हो गई।

आप रोम सेंटर के साथ संपर्क में कैसे रहे?

मैंने रोम सेंटर के ऑनलाइन कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू कर दिया। संघ के सदस्यों के साथ, मैंने *लिविंग द लोटस* में प्रकाशित प्रेसिडेंट निवानो के मासिक संदेश को पढ़ा और उस पर चर्चा की। कभी-कभी मैं सदस्यों की धर्म यात्रा की बातें सुनता था और उनसे जो कुछ सीखा था उसे साझा करने के लिए होज़ा सत्रों में शामिल होता था। दिसंबर 2013 में, रेव. मिजुमो जोहान्सबर्ग में मेरे घर आए और उन्होंने स्थानीय रूप से प्रदान किए गए गोहोनज़ोन, या "भक्ति का केंद्र" को प्रतिष्ठित किया। मैं बहुत प्रभावित हुआ और आभारी हुआ। मुझे खुशी हुई कि मेरी माँ और बड़ी बहन सहित दस लोग गोहोनज़ोन प्रतिष्ठापन समारोह में शामिल हुए। मेरी माँ 92 वर्ष की आयु में अपने निधन तक मेरे साथ रहीं। यद्यपि वह ईसाई थी, फिर भी वह खुश थी कि मुझे रिश्शो कोसेई-काई पर पूरा भरोसा है। कोविड-19 महामारी के दौरान, जब कई कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किए गए, तो उन्होंने व्याख्यानों और होज़ा सत्रों को बड़ी रुचि से सुना और बाद में अपने अनुभव मेरे साथ साझा किए।

रिश्शो कोसेई-काई के किस पहलू से आप प्रभावित हुए?

मुझे सबसे अधिक इस बात ने प्रभावित किया कि रिश्शो कोसेई-काई एक बहुत ही खुले विचारों वाला संगठन है। मैं वास्तव में विभिन्न मूल्यों और धर्मों को स्वीकार करने तथा उन मतभेदों से परे समान आधार खोजने की इसकी क्षमता की प्रशंसा करता हूँ। जिस तरह से

श्री एंड्र्यू क्रिस्टी

रिश्शो कोसेई-काई जापान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतर-धार्मिक संवाद और सहयोग को सक्रिय रूप से बढ़ावा देती है, वह उसकी खुले विचारों वाली सोच का एक मजबूत उदाहरण है।

मैं इस बात से भी प्रभावित हूँ कि रिश्शो कोसेई-काई सूत्र पाठ को महत्व देता है, जो कि इस धर्म के सदस्यों की मूलभूत प्रथाओं में से एक है। मैं सुबह और शाम के सूत्र पाठ को आवश्यक मानता हूँ, और हर दिन, क्योतेन के अलावा, मैं त्रिविध लोटस सूत्र से एक अध्याय का पाठ करता हूँ। इस अभ्यास से मुझे गहरी शांति का एहसास होता है। विशेषकर सुबह का पाठ, जो मैं काम पर जाने से पहले करता हूँ, मुझे अपना दिन दृढ़ संकल्प के साथ शुरू करने की शक्ति और दृढ़ संकल्प देता है। सूत्र पाठ के अभ्यास के माध्यम से, मुझे लगता है कि मुझे महान पुण्य प्राप्त हो रहा है, जैसे कि अपने मित्रों और परिचितों के साथ बेहतर संबंध बनाने के बारे में ज्ञान प्राप्त करना, हर चीज को साहस के साथ करने को सीखना, और स्वयं पर गहराई से चिंतन करने की क्षमता प्राप्त करना।

क्या रिश्शो कोसेई-काई की शिक्षाओं में कोई ऐसे शब्द या कार्य हैं जिन्हें आप विशेष रूप से महत्व देते हैं?

हर महीने, मैं लिविंग द लोटस से प्रेसिडेंट निवानो के संदेश को अपने टैबलेट पर डाउनलोड करता हूँ और हर सुबह और शाम को इसे बार-बार पढ़ने की आदत बनाता हूँ। सुबह सूत्र पाठ के बाद, मैंने प्रेसिडेंट निवानो का संदेश पढता हूँ, और काम से लौटने के बाद, शाम के सूत्र-पाठ के बाद, मैंने संस्थापक निवानो का धर्म संदेश पढता हूँ । हाल ही में, मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ जब प्रेसिडेंट निवानो ने हृदय के क्षेत्र को जोतने के महत्व पर जोर दिया, तथा सुत्त निकाय से ये श्लोक उद्धृत किए: "बुद्धि मेरा हल है, और विनम्रता मेरे हल के फाल हैं।" ये शब्द मुझे अपने हृदय को निरंतर विकसित करने की आवश्यकता की याद दिलाता हैं। मेरे लिए, फाउंडर निवानो और प्रेसिडेंट निवानो की शिक्षाएँ आत्म-चिंतन और आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यावश्यक मार्गदर्शक हैं।

आपने पिछले साल अक्टूबर में टोक्यो स्थित रिश्शो कोसेई-काई हेडक्वाटर का दौरा किया था। आपके दौरे का उद्देश्य क्या था?

जोहान्सबर्ग में रहते हुए, मैं रोम सेंटर की गतिविधियों में केवल ऑनलाइन ही भाग ले सकता था। इसलिए मेरा मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षण प्राप्त करना, हेडक्वाटर में व्यक्तिगत रूप से होज़ा का अनुभव करना, तथा हेडक्वाटर द्वारा प्रदत्त गोहोनज़ोन मूर्ति प्राप्त करना था।मेरा मानना है कि बौद्ध धर्म सिर्फ व्यक्तिगत अभ्यास के लिए नहीं है, बल्कि दूसरों की मदद करने और सभी को खुशी देने के लिए भी है। इसीलिए, घर लौटने के बाद, मैंने साहस और आत्मविश्वास के साथ बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करने का संकल्प लिया, तथा जो कुछ मैंने सीखा था, उसे लागू किया।

मैंने व्यक्तिगत तीर्थयात्रा के रूप में अक्टूबर के मध्य में लगभग दो सप्ताह तक रिश्शो कोसेई-काई के हेडक्वाटर और अन्य संबंधित स्थानों का दौरा किया। मैंने ग्रेट सेक्रेड हॉल और हेडक्वाटर की अन्य सुविधाओं का दौरा किया, सुगानुमा, निगाता प्रान्त में फाउंडर निवानो के जन्मस्थान का दौरा किया, और नेरिमा धर्म सेंटर के सदस्यों के साथ हेडक्वाटर में ओशिकी इचिजो महोत्सव में भाग लिया। मैंने डॉ. डोमिनिक स्कारंगेलो द्वारा बौद्ध धर्म और लोटस सूत्र पर दिए गए व्याख्यानों में भी भाग लिया, जो रिश्शो कोसेई-काई के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार हैं। टोक्यो के नेरिमा धर्म सेंटर में मैंने धार्मिक क्रिया का प्रशिक्षण लिया, सूत्र पाठ के दौरान घंटी और लकड़ी के घंटी को बजाना सीखा, तथा धर्म प्रसार अभ्यास में भाग लिया। अपनी यात्रा के दौरान, मैं प्रत्येक मुलाकात से अधिक से अधिक सीखने की इच्छा से भर गया, जैसे स्पंज पानी सोखता है। फिर, 27 अक्टूबर को, घर लौटने से ठीक पहले, मुझे रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल के निर्देशक रेव. केइची अकागावा से हेडक्वाटर द्वारा प्रदान किया गया गोहोनज़ोन प्राप्त करने का सम्मान मिला। 02 नवंबर को रेव. मिजुमो एक बार फिर से जोहान्सबर्ग में मेरे घर

श्री क्रिस्टी (मध्य में) ओशिकी इचिजो महोत्सव में भाग लेते हुए।

आए और गोहोनज़ोन प्रतिष्ठापन समारोह का संचालन किया।

अंत में, दक्षिण अफ्रीका में रिश्शो कोसेई-काई के प्रथम सदस्य के रूप में, क्या आप अभ्यास के लिए अपने लक्ष्य और भविष्य के लिए अपने सपने को साझा कर सकते हैं?

मेरा वर्तमान में व्यक्तिगत लक्ष्य स्वार्थ और क्रोध को खत्म करना और अधिक सहृदय व्यक्ति बनना है। रोजमर्रा के मानवीय रिश्तों के संदर्भ में इसका अर्थ है दूसरों की राय को खारिज न करना,अपनी भावनाओं के आधार पर दूसरों की आलोचना न करना और क्रोधित न होना। मैं एक उदार हृदय वाला व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो बिना किसी भेदभाव के सभी के साथ बातचीत कर सके, दूसरों के शब्दों और कार्यों को स्वीकार कर सके, तथा अपने आस-पास के लोगों में शांति और आश्वासन की भावना ला सके। यह आदर्शवादी हो सकता है, लेकिन मेरा मानना है कि बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का सार यही है। इसलिए, मैं बौद्ध धर्म और लोटस सूत्र का और गहराई से अध्ययन करना चाहता हूँ और अपनी लगनशील साधना जारी रखना चाहता हूँ।

रिश्शो कोसेई-काई के सदस्य के रूप में, मैं दक्षिण अफ्रीका में और अधिक लोगों के साथ इस अद्भुत शिक्षा को साझा करने की आशा करता हूँ। मेरा एक लक्ष्य निकट भविष्य में दक्षिण अफ्रीका में एक संघ स्थापित करना है। मैं आभारी रहूँगा, यदि मैं अपने घर को दक्षिण अफ्रीका में धर्म के प्रचार के लिए आधिकारिक तौर पे आधार के रूप में उपयोग कर सकूँ, जहाँ सदस्य सेमिनारों और होजा सत्रों में भाग लेने के लिए एकत्र हो सकें।

यद्यपि रंगभेद आधिकारिक तौर पर 1994 में समाप्त हो गया, फिर भी दक्षिण अफ्रीका को अपनी विरासत के कारण कई कठिन मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे गरीबी, घटती सार्वजनिक सुरक्षा और उच्च बेरोजगारी दर, जिसके कारण कई लोग पीड़ित हैं। लेकिन मेरा मानना है कि बौद्ध धर्म में समुदायों और देशों को बदलने की शक्ति है। मुझे विश्वास है कि रिश्शो कोसेई-काई की शिक्षाएँ दक्षिण अफ्रीका को और अधिक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण देश बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।

श्री क्रिस्टी ने रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल के निर्देशक रेव. केइची अकागावा से हेडक्वाटर-प्रदत्त गोहोनज़ोन प्राप्त करते हुए।

रिश्शो कोसेइ काइ की सुविधाएँ

ओमे रिट्रीट सेंटर और संस्थापक का जन्मस्थान केंद्र

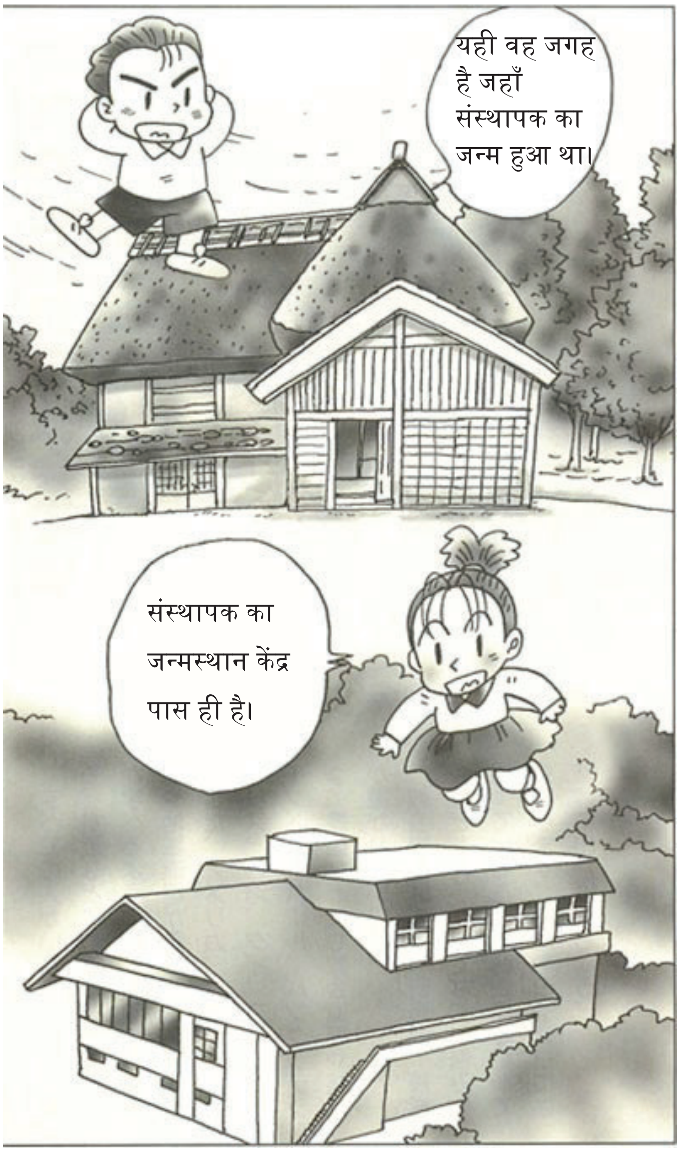

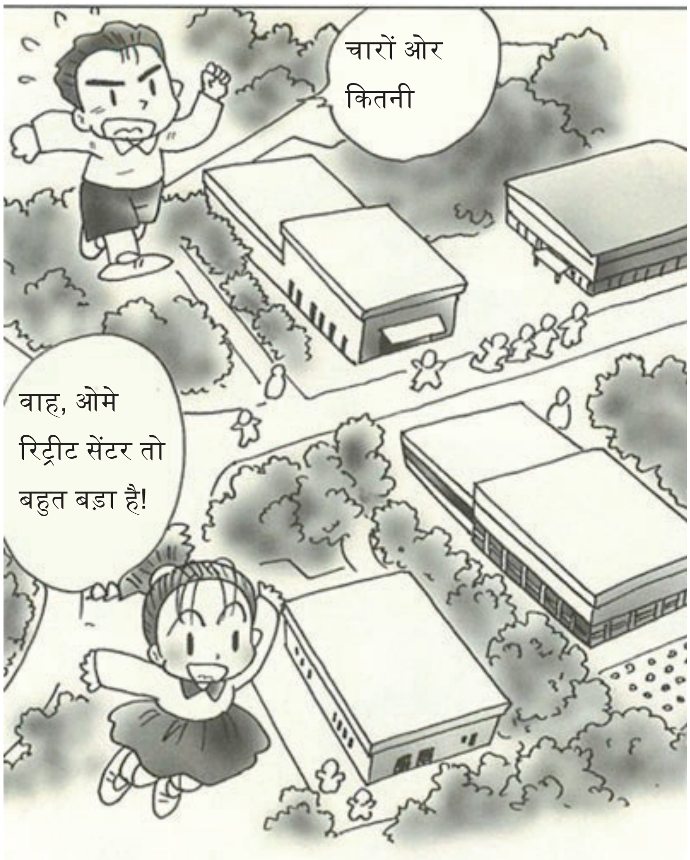

ओमे रिट्रीट सेंटर का निर्माण 1966 में टोक्यो के ओमे शहर में युवा सदस्यों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में पूरा हुआ था। हरियाली से घिरे एक विशाल भूखंड पर स्थित, इसमें दो प्रशिक्षण हॉल, एक ट्रैक और फील्ड स्टेडियम, एक बेसबॉल मैदान और बहुत कुछ है। आज यह सभी सदस्यों के लिए एक प्रशिक्षण स्थल के रूप में कार्य करता है।

निगाटा प्रान्त के तोकामाची शहर के सुगानुमा में 1978 में निर्मित संस्थापक जन्मस्थान केंद्र—जहाँ संस्थापक का जन्म हुआ था—संस्थापक के जन्मस्थान की तीर्थयात्राओं के लिए आधार का काम करता है। पास ही उस घर की एक सच्ची प्रतिकृति है जहाँ संस्थापक का जन्म हुआ था।

क्या आप जानते हैं?

जिस घर में संस्थापक का जन्म हुआ था, उसकी हूबहू प्रतिकृति 2006 में संस्थापक के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित परियोजनाओं में से एक के रूप में बनाई गई थी। जब आप सुगानुमा जाएँ, तो वहाँ जरूर रुकें और संस्थापक के उन दिनों के जीवन पर विचार करें

* इस सामग्री का कोई भी पुनरुत्पादन या पुनर्प्रकाशन व्यक्तिगत, गैर-व्यावसायिक और सूचनात्मक उपयोग के लिए पुनरुत्पादन के अलावा निषिद्ध है।

पान और विदेशों में स्थित धर्म केंद्र

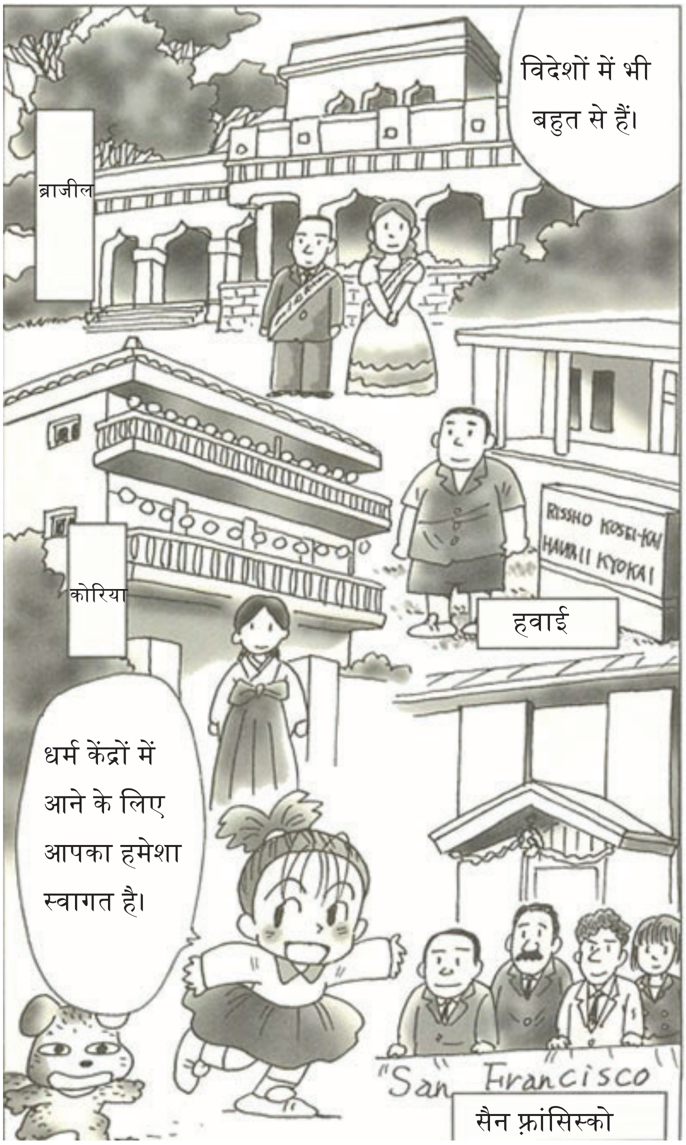

रिश्शो कोसेइ काइ ने पूरे देश में अपने धर्म केंद्र और प्रशिक्षण हॉल बनाए हैं, ताकि लोग हमेशा अपने स्थानीय स्थान पर पुण्डरीक सूत्र की शिक्षाओं तक पहुँच सकें।

इसके अलावा, संगठन के संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील, इंग्लैंड, ताइवान, थाईलैंड, श्रीलंका, भारत, नेपाल, बांग्लादेश और कोरिया जैसे देशों में धर्म केंद्र और स्थानीय शाखाएँ हैं।

धर्म केंद्र केवल समारोहों, संगोष्ठियों और आध्यात्मिक साधना के लिए ही नहीं होते, बल्कि लोगों को एक-दूसरे से सीखकर अपनी चिंताओं और कठिनाइयों का समाधान खोजने के लिए भी होते हैं। उपोसथ के दिनों और छुट्टियों पर, किसी धर्म केंद्र में जाने पर विचार करें।

क्या आप जानते हैं?

रिश्शो कोसेइ काइ के क्योतेन (सूत्र वाचन) के आरंभिक श्लोक में, हम “मार्ग के स्थान पर ध्यान” का पाठ करते हैं। इस श्लोक में कहा गया है कि हमारे दैनिक जीवन के सभी स्थान, जैसे घर, विद्यालय और कार्यस्थल, धर्म के अभ्यास के स्थान हैं। फिर भी, इसे अकेले व्यवहार में लाना बहुत कठिन है। इसीलिए शिक्षा के अभ्यास के लिए धर्म केंद्र आवश्यक हैं।

* इस सामग्री का कोई भी पुनरुत्पादन या पुनर्प्रकाशन व्यक्तिगत, गैर-व्यावसायिक और सूचनात्मक उपयोग के लिए पुनरुत्पादन के अलावा निषिद्ध है।

दूसरों से जुड़ना

अपने सबसे करीबी लोगों को आजाद करना

निक्क्यो निवानो
रिश्शो कोसेइ काइ का संस्थापक

हमारी दुनिया को बदलने की शिक्षाओं को साझा करने के उद्देश्य से, हमारी पहली प्राथमिकता अपने सबसे करीबी लोगों को उनकी चिंताओं और दुखों से मुक्त करना होनी चाहिए। आप में से कुछ लोग शायद यह सोचते हों कि लोगों को गरीबी, बीमारी और संघर्ष से मुक्ति दिलाना रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना के दिनों की बात है, लेकिन आज भी गरीबी, बीमारी और संघर्ष के नए रूप में लगातार बढ़ना हो सकता है।

इसलिए, हमें पुण्डरीक सूत्र का बार-बार पाठ करके और उसकी टीकाओं को बार-बार पढ़कर, संसार की निरंतर बदलती परिस्थितियों को समझने का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, ताकि हम उसके सत्य को आत्मसात कर सकें। यदि हम इस ज्ञान को प्राप्त करने में असफल रहते हैं, तो हम अपने सामने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की चिंताओं और पीड़ाओं को समझने में असमर्थ होंगे—और परिणामस्वरूप, उन्हें जिन कुशल साधनों की आवश्यकता है, वे हमें कभी नहीं मिलेंगे।

मैं आपको यही संदेश देना चाहता हूँ: भले ही आप किसी के साथ जो बुद्ध धर्म साझा करते हैं, उससे तुरंत परिणाम न मिलें, मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें कि धर्म साझा करके, आपने उस व्यक्ति के हृदय की गहराई में एक अनमोल बीज बोया है। आपके द्वारा बोया गया यह बीज किसी दिन उचित परिस्थितियों में अवश्य अंकुरित होगा। मेरी हार्दिक और अटूट कामना है कि आप इस पर विश्वास रखें और बिना किसी हिचकिचाहट या निराशा के बोधिसत्व साधना में समर्पित होते रहें।

Bodai no me o okosashimu (Kosei Publishing, 2018), p.83-84

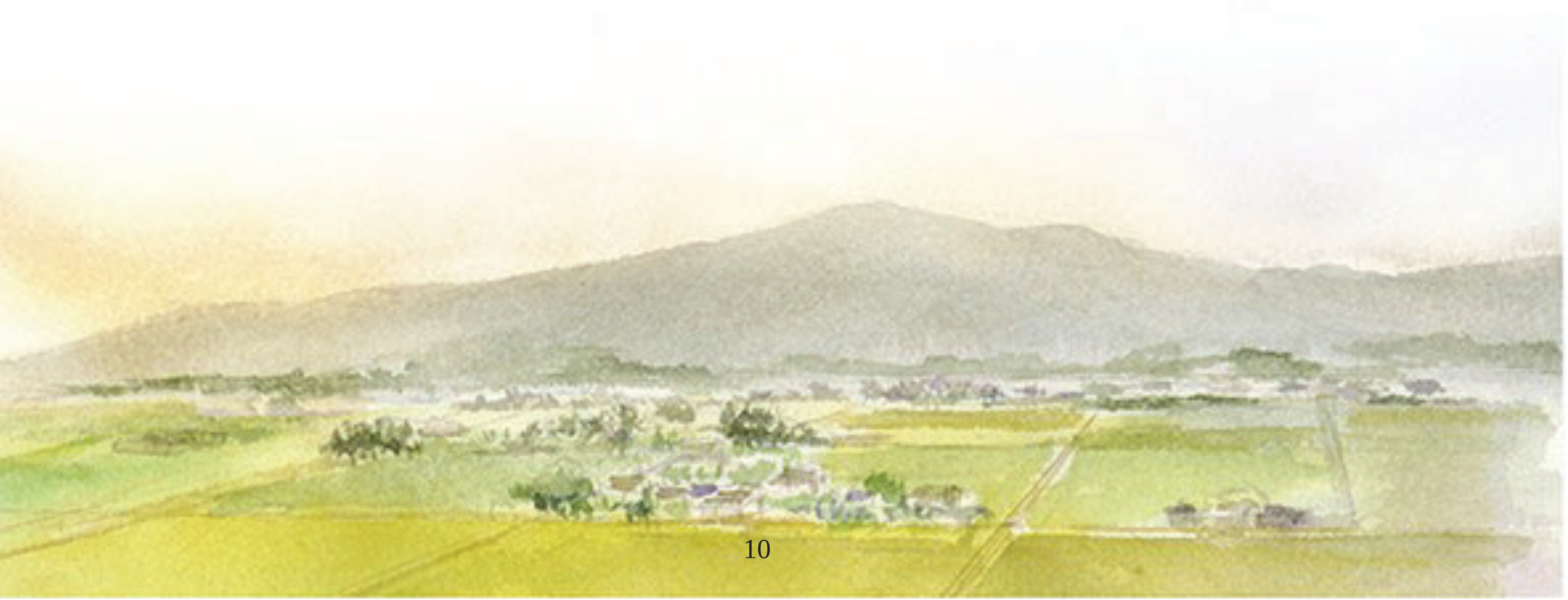

अस्तित्व के चार अवधियों से प्रेरित एक संपूर्ण जीवन

रेव. केईची आकागावा

डायरेक्टर, रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल

सभी को नमस्कार। जैसा कि एक पुरानी जापानी कहावत है, "गर्मी और सर्दी विषुव तक रहती है।" यद्यपि गर्मी का प्रकोप अभी भी बना हुआ है, लेकिन कभी-कभी मेरे गालों को छूती ठंडी हवा मुझे याद दिलाती है कि मौसम सचमुच बदल रहा है। आशा है सब कुशल मंगल है।

इस महीने के संदेश में, प्रेसिडेंट निवानो ने अस्तित्व की चार अवधियों की प्राचीन भारतीय अवधारणा का परिचय दिया है जो हमारे जीवनकाल को चार ऋतुओं के अनुरूप चार भागों में विभाजित करती है, और हमें सिखाते हैं कि कैसे एक संपूर्ण जीवन जिया जाए। जीवन के इस दर्शन से मेरी पहली परिचय चालीस वर्ष की उम्र में हुआ, जब मैंने हिरोयुकी इत्सुकी की पुस्तक रिन्जुकी पढ़ी। यह शिक्षा जीवन को चार अवस्थाओं में विभाजित करती है – विद्यार्थी अवस्था, गृहस्थ अवस्था, वनवास अवस्था और स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण अवस्था - तथा प्रत्येक अवस्था के लिए उपयुक्त जीवन-पद्धति का वर्णन करती है। जबकि मुझे लगा कि आधुनिक समाज में इन दिशानिर्देशों का अक्षरशः पालन करना शारीरिक और आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण होगा, मुझे याद है कि मैंने सोचा था कि शायद अस्तित्व की चार आध्यात्मिक अवधियाँ संभव होंगी। यदि कोई व्यक्ति वास्तविकता में इस तरह जीवन जी सके, तो वह निश्चित रूप से पूर्ण स्वतंत्रता का आनंद ले पायेगा।

प्रेसिडेंट जीवन की शरद ऋतु का वर्णन करते हैं, जो वन में जाने की अवस्था से मेल खाती है, "जीवन का वह समय जब हम धीरे-धीरे उन चीजों से मुक्त हो जाते हैं, जो अब तक हमें परेशान करने वाली लगती थीं, और हम स्पष्ट मन और संतोषजनक तथा आशापूर्ण चीजों से भरे हृदय के साथ शीत ऋतु की ओर मुड़ते हैं।" जिस प्रकार चारों ऋतुएँ अपना-अपना विशिष्ट फल प्रदान करती हैं, उसी प्रकार जीवन का प्रत्येक चरण अपना-अपना आशीर्वाद प्रदान करती है। हमें जीवन के प्रत्येक चरण में अभाव की भावना और अपने विश्वास को भूलने से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए, और इसके बजाय अपने चारों ओर मौजूद आशीर्वादों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस सत्य को याद करते हुए कि "वर्तमान ही अतीत का परिणाम है, और वर्तमान ही भविष्य का निर्माण करती है"। मैं, इस महीने भी हमेशा की तरह विनम्र और कृतज्ञ हृदय से निरंतर प्रयास करने की आशा करता हूँ।

रेव. अकागावा कोरिया और मंगोलिया के लीडर्स के साथ, जिन्होंने 2 अगस्त को हेडक्वाटर में आयोजित ईस्ट एशिया लीडरशिप एजुकेशन प्रोग्राम के अंतिम सत्र में भाग लिया था। इस वर्ष, हेडक्वाटर में सत्र से पहले, तीन ऑनलाइन सत्र आयोजित किए गए थे, जिनमें ताइनान धर्म केंद्र के लीडर्स ने भी भाग लिया था।

A Global Buddhist Movement

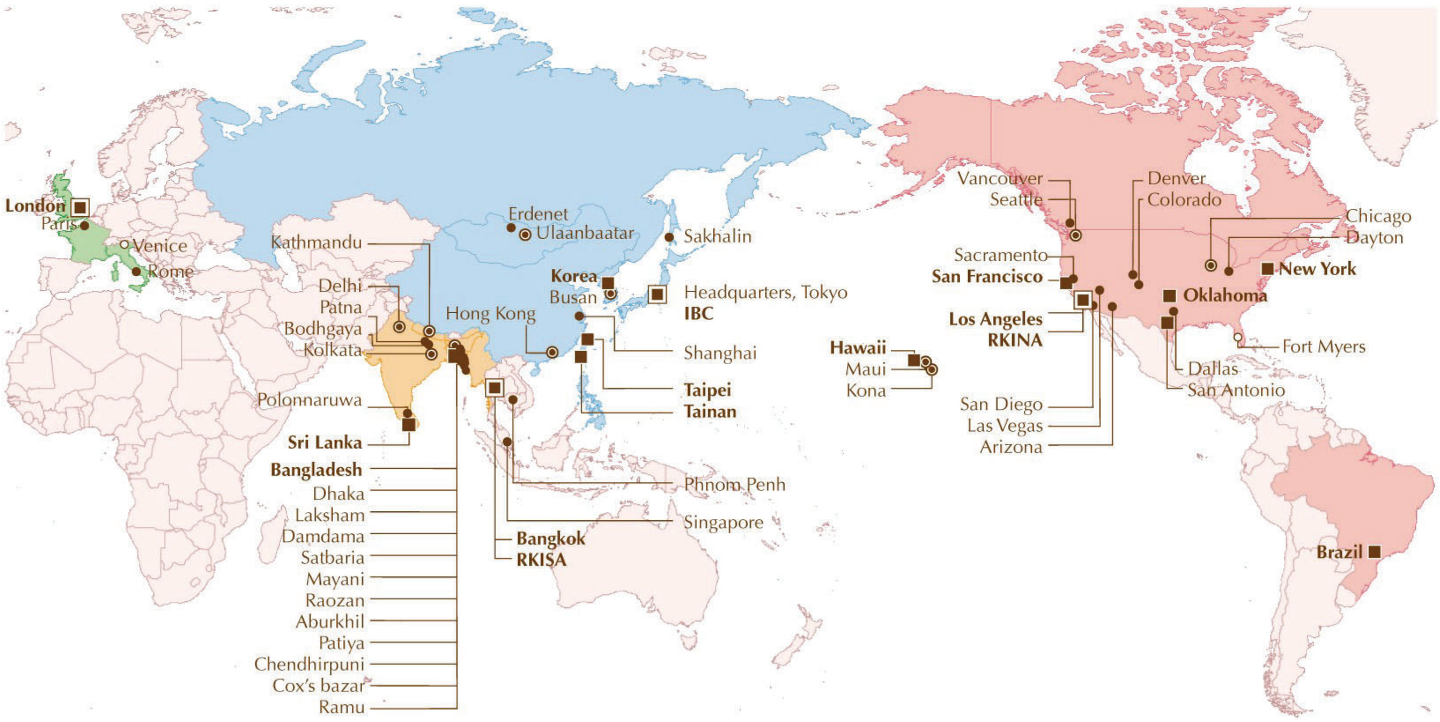

Information about local Dharma centers

facebook

X

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp